क्या करे कोई

प्रफुल्ल कोलख्यान

चश्मा पहनने से सिर्फ चश्मा दिखे तो ऐसे चश्मे का क्या करे कोई
साहित्य पढ़ने से सिर्फ साहित्य दिखे तो ऐसे पढ़े का क्या करे कोई

मुहब्बत में मुहब्बत ही दिखे केवल तो, ऐसे दिखे का क्या करे कोई
हुस्न की ढलान में भी मुहब्बत न खिले, ऐसे खिले का क्या करे कोई

जज्वात में हो रंग और हकीकत बदरंग तो, ऐसे रंग का क्या करे कोई
बिन कहे तो क्या कहने पर भी न समझे ऐसे अंतरंग का क्या करे कोई

इंतजार में हो जाये मन ही बुझ जाये, ऐसे इंतजार का क्या करे कोई
मिलन में न हो कोई खनक तो ऐसे इंतजार मिलन का क्या करे कोई

वक्त बदल देता, मुहब्बत बदल जाये ऐसे मुहब्बत का क्या करे कोई
हुस्न के मय्यार को सोता ही सूख जाये, ऐसे सोता का क्या करे कोई